20/01/22

Page No.: 1
Date: / /

Q. समाजीकरण की प्रक्रिया
(Socialisation Process)

Ans→ समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो नवजात शिशु को सामाजिक प्राणी बनाती है। इस प्रक्रिया के अभाव में व्यक्ति सामाजिक प्राणी नहीं बन सकता। इसी से सामाजिक व्यक्तित्व का विकास होता है। सामाजिक - सांस्कृतिक विरासत के तत्वों का परिचय भी इसी से प्राप्त होता है।

सामाजीकरण से न केवल मानव जीवन का प्रभाव अखण्ड तथा सतत रहता है, बल्कि इसी से मानवोचित गुणों का विकास होता है और व्यक्ति सुसभ्य व सुसंस्कृत भी बनता है।

संस्कृति का हस्तान्तरण भी समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा होता है। समाजीकरण की प्रक्रिया के बिना व्यक्ति सामाजिक गुणों को प्राप्त नहीं कर सकता है। अतः यह एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया मानी जाती है।

समाजीकरण की प्रक्रिया में उन मानकों, मूल्यों और विश्वासों को प्राप्त किया जाता है। इस तरह यह सांस्कृतिक मूल्यों, प्राथमिकताओं और प्रतिमानों को बच्चों के व्यवहार में संक्रमित करने की प्रक्रिया है। यह विभिन्न प्रक्रियाओं, शैक्षिक संस्थाओं और लोगों द्वारा सम्पन्न होती है।

समाजीकरण में बच्चों के व्यवहार को निर्देशित करना और अनैच्छिक एवं गलत व्यावहारिक प्रवृत्तियों को अनुशासित करना आता है।

समाजीकरण के कुछ महत्वपूर्ण अभिकर्ता माता-पिता, समवयस्क समूह, विद्यालय, धार्मिक संस्थाएं और जनसंचार माध्यम जैसे - दूरदर्शन इत्यादि। ये प्रत्यक्ष रूप से बच्चों को पालने की प्रक्रिया में प्रभाव डालते हैं साथ ही साथ अप्रत्यक्ष रूप से सांस्कृतिक रूढ़ियों के विचार और व्यवहार को बल देते हैं।

प्रारम्भिक बाल्यकाल विकास का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण समय है क्योंकि इस समय बच्चे अपने परिवार, समाज और संस्कृति के रीति-रिवाज और रीतियों के बारे में बहुत कुछ सीखते हैं। वे भाषा ग्रहण करते हैं और संस्कृति के आधारभूत विज्ञान सीखते हैं। इस अवस्था में प्राथमिक समाजीकरण के अभिकर्ता परिवार के सदस्य होते हैं।

मध्य बाल्यकाल में परिवार महत्वपूर्ण होते रहते हैं समवयस्कों एवं विद्यालय का प्रभाव प्रमुख हो जाता है। संचार माध्यमों जैसे दूरदर्शन और कम्प्यूटर का प्रभाव अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। यही वह समय है जब सामाजिक रूढ़ियाँ और पूर्वाग्रह विकसित होने की संभावना होती है।

कई शोध किए गए है कि पालने के तरीकों का प्रभाव बच्चों के समाजीकरण पर पड़ता है। परिवार साथी, संचार माध्यम और विद्यालय के अतिरिक्त भी कुछ दूसरे कारक है जो समाजीकरण की प्रक्रिया पर प्रभाव डालते है। माता पिता की सामाजिक - आर्थिक स्थिति और कुल परम्परा बच्चों विकास में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से असर डालते है। कुल परम्परा (खानदानी सेरी), परिवार के आकार संरचना, शिक्षा आय रचना और फैले हुए जाल से जुड़ी होती है।

बौद्धिक समाजशास्त्र के विद्वान बोगार्डस ने समाजीकरण की परिभाषा इस प्रकार दी है "समाजीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक द्वारा सामाजिक आत्म - नियन्त्रण, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा सन्तुलित व्यक्तित्व का अनुभव प्राप्त करते है।"

समाजीकरण का कार्य समाज में रहकर ही सम्भव है, समाज के अलग रहकर नहीं। यह व्यक्ति को सामाजिक परम्पराओं, प्रथाओं, रूढ़ियों मूल्यों, आदर्शों आदि का पालन करना और विपरित सामाजिक परिस्थियों में अनुकुलन करना सिखता है।

समाजीकरण द्वारा संस्कृति, सभ्यता और अन्य अनाजीमित विशेषताएं पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तान्तरित होती है, और जीवित रहती है।

DR Vijant Kumar Mishra
Asst Professor
(Guest Faculty)
Dept of Sociology.
B.A Hons Part [illegible]
20/01/22